के.रि.पु.बल
शौर्यगाथाएँ
Vol.11
किशनजी
एक आतंक का अंत
सत्य घटनाओं पर आधारित

वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक

वरीयता क्रम में शौर्य चक्र के बाद आने वाला वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक देश की आंतरिक सुरक्षा, देश हित और देश की रक्षा के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर देने वाले वीर पुलिस कर्मियों को प्रदान किया जाता है। इस पदक के साथ एक मासिक-भत्ता भी प्रदान किया जाता है जो कार्मिक की सेवानिवृत्ति के बाद भी जारी रहता है तथा कार्मिक के मृत्युपरांत उसके आश्रित को भी दिया जाता है। लगातार दूसरी बार यह पदक बार-एक और इसी क्रम में पुलिस पदक बार-दो और आगे इसी क्रमिक रूप से जारी रहता है।

CENTRAL RESERVE POLICE FORCE

के.रि.पु.बल
शौर्यगाथाएँ

किशनजी
एक आतंक का अंत

CENTRAL RESERVE POLICE FORCE

प्रस्तुतिः संजय गुप्ता
लेखनः नितिन मिश्रा
चित्रांकनः हेमंत कुमार
स्याहीकारः विनोद कुमार
आवरणः हेमंत कुमार, ईशान त्रिवेदी
रंग सज्जाः सुनील दस्तुरिया
शब्दांकनः मंदार गंगेले
संपादनः मनीष गुप्ता

Published By: Raj Comics (an imprint of Raja Pocket Books) on behalf of Directorate General C.R.P.F.

Raj Comics
330/1, Burari
Delhi-110084
www.rajcomics.com
Ph. 01127611410

Copyright © 2016 Central Reserve Police Force

Printed By: Prince Print Process

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed or transmitted in any form or by any means, including photocopy, recording or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the publisher- For permission requests write to the publisher addressed "Attention: Permissions Coordinator" at the address below.

Inspector General (Operations)
Central Reserve Police Force
Email: igops@crpf.gov.in

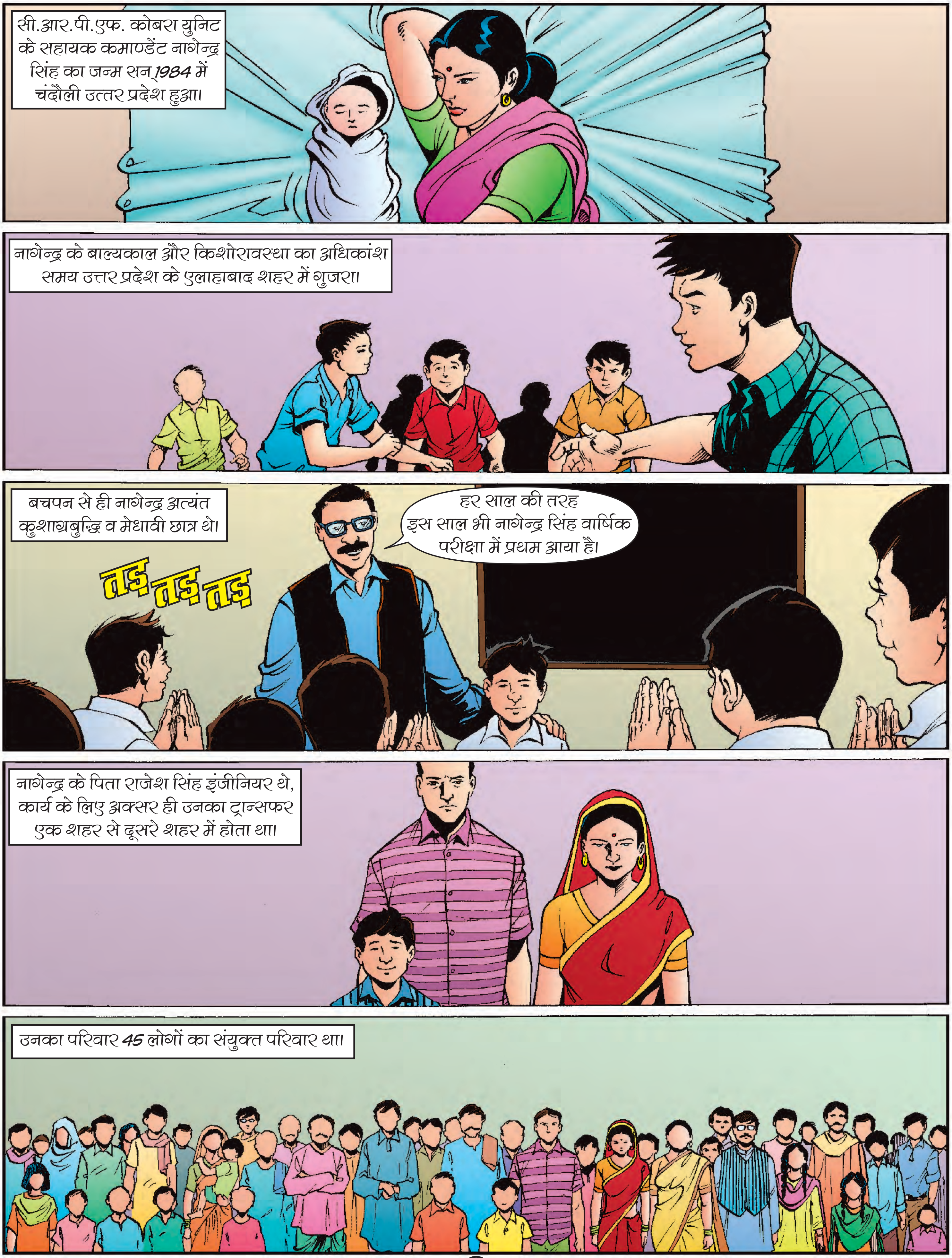
सी.आर.पी.एफ. कोबरा युनिट के सहायक कमाण्डेंट नागेन्द्र सिंह का जन्म सन 1984 में चंदौली उत्तर प्रदेश हुआ।
नागेन्द्र के बाल्यकाल और किशोरावस्था का अधिकांश समय उत्तर प्रदेश के एलाहाबाद शहर में गुजरा।
बचपन से ही नागेन्द्र अत्यंत कुशाग्रबुद्धि व मेधावी छात्र थे।
हर साल की तरह इस साल भी नागेन्द्र सिंह वार्षिक परीक्षा में प्रथम आया है।
तड़ तड़ तड़
नागेन्द्र के पिता राजेश सिंह इंजीनियर थे, कार्य के लिए अक्सर ही उनका ट्रान्सफर एक शहर से दूसरे शहर में होता था।
उनका परिवार 45 लोगों का संयुक्त परिवार था।

पढ़ाई के अलावा बचपन से ही नागेन्द्र खेल-कूद में भी अव्वल थे।
बहुत अच्छे नागेन्द्र!
क्रिकेट खेलने में नागेन्द्र की विशेष रूप से रुचि थी।
और यह नागेन्द्र सिंह के द्वारा एक और बेहतरीन शॉट, बॉल सीधे पवेलियन पार छः रनों के लिए।
उन्होंने लम्बे समय तक क्रिकेट खेला, बचपन में उनका रुझान क्रिकेटर बनने की ओर ही था।
एंड द मैन ऑफ दी मैच इज नागेन्द्र सिंह।
नागेन्द्र के एक चचेरे बड़े भाई आर्मी में थे, जिनका बालक नागेन्द्र में फौज के प्रति आकर्षण जगाने में विशिष्ट योगदान रहा।
भईया! आप आ गए!
बड़े भाई द्वारा सुनाई गई फौज और जवानों की शौर्यगाथाएं नन्हे नागेन्द्र के मानसपटल पर गहरी अंकित हो गई थीं।
नागेन्द्र के सपनों को एक नई दिशा मिल गई थी।
मैं भी बड़ा होकर देश की रक्षा करूंगा।

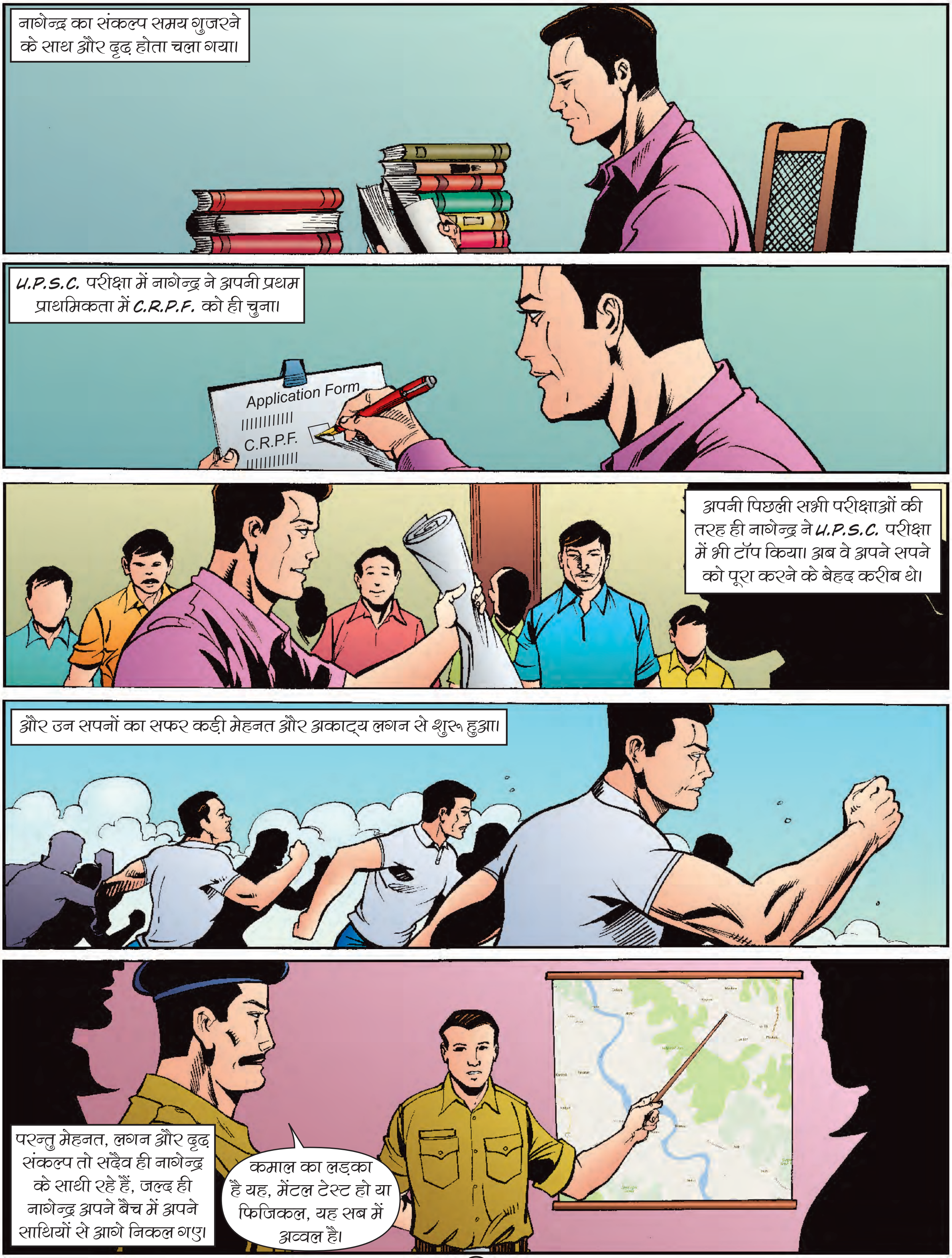
नागेन्द्र का संकल्प समय गुजरने के साथ और दृढ़ होता चला गया।
U.P.S.C. परीक्षा में नागेन्द्र ने अपनी प्रथम प्राथमिकता में C.R.P.F. को ही चुना।
Application Form
C.R.P.F.
अपनी पिछली सभी परीक्षाओं की तरह ही नागेन्द्र ने U.P.S.C. परीक्षा में भी टॉप किया। अब वे अपने सपने को पूरा करने के बेहद करीब थे।
और उन सपनों का सफर कड़ी मेहनत और अकाट्य लगन से शुरू हुआ।
परन्तु मेहनत, लगन और दृढ़ संकल्प तो सदैव ही नागेन्द्र के साथी रहे हैं, जल्द ही नागेन्द्र अपने बैच में अपने साथियों से आगे निकल गए।
कमाल का लड़का है यह, मेंटल टेस्ट हो या फिजिकल, यह सब में अव्वल है।

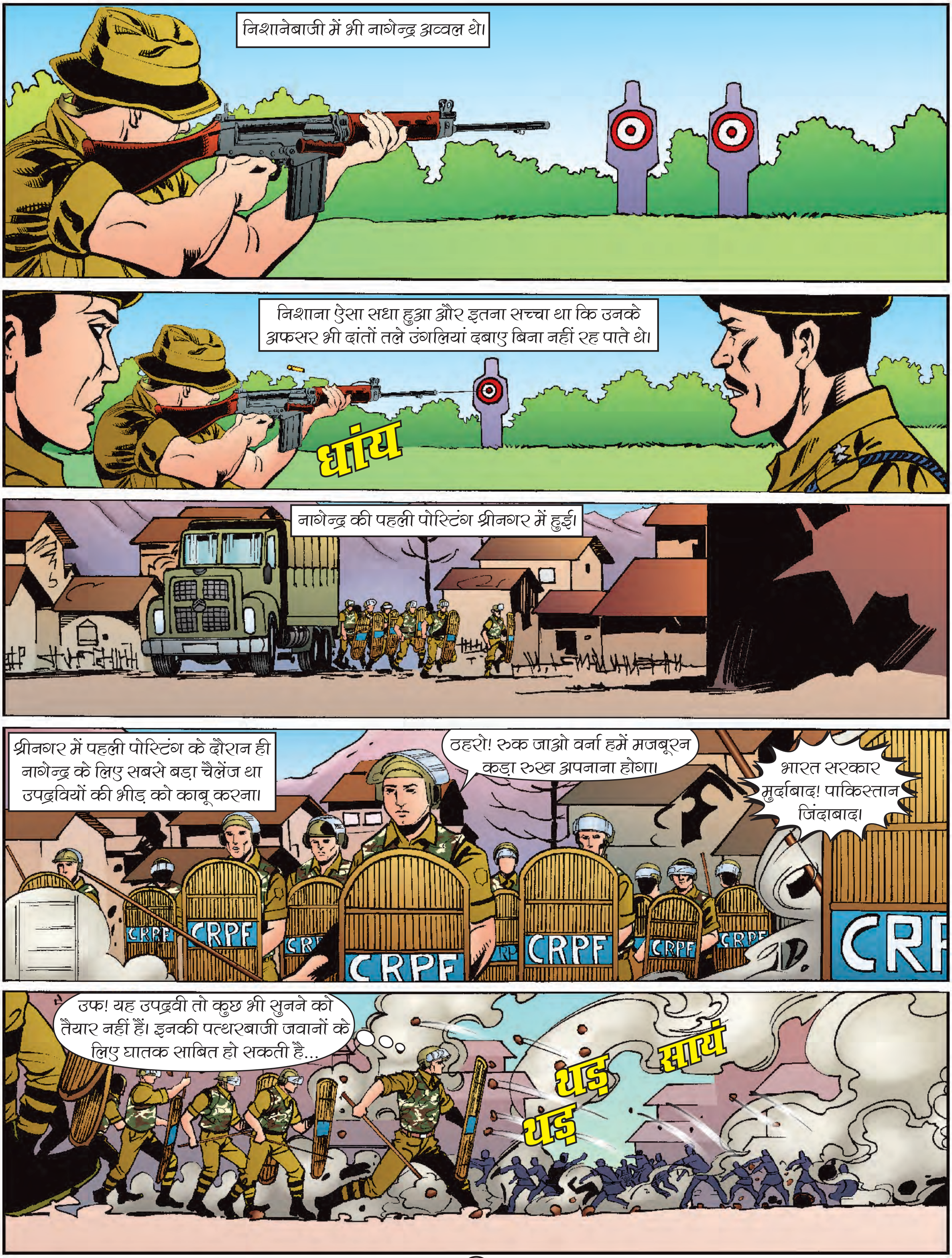

निशानेबाजी में भी नागेन्द्र अव्वल थे।
निशाना ऐसा सधा हुआ और इतना सच्चा था कि उनके अफसर भी दांतों तले उंगलियां दबाए बिना नहीं रह पाते थे।
धांय
नागेन्द्र की पहली पोस्टिंग श्रीनगर में हुई।
श्रीनगर में पहली पोस्टिंग के दौरान ही नागेन्द्र के लिए सबसे बड़ा चैलेंज था उपद्रवियों की भीड़ को काबू करना।
ठहरो! रुक जाओ वर्ना हमें मजबूरन कड़ा रुख अपनाना होगा।
भारत सरकार मुर्दाबाद! पाकिस्तान जिंदाबाद।
CRPF
उफ! यह उपद्रवी तो कुछ भी सुनने को तैयार नहीं हैं। इनकी पत्थरबाजी जवानों के लिए घातक साबित हो सकती है...
सायं
धड़
धड़

धड़
आह
...पत्थरों से जवान घायल हो सकते हैं।
अगर इन उपद्रवियों पर जवाबी कार्यवाही की तो स्थिति और तनावपूर्ण हो सकती है, इनमें से अधिकतर लोकल सिविलियंस हैं जिन्हें राजनितिक फायदों के लिए भड़काकर यह सब करवाया जा रहा है।
इन पर बलप्रयोग करने से इन्हें उकसाने वालों का मकसद पूरा होगा, पहले से ही भड़के हुए यह लोग और भड़क जाएंगे।
नागेन्द्र के लिए स्थिति बेहद विकट थी।
अगर इन्हें नहीं रोका गया तो ये जवानों और पब्लिक प्रॉपर्टी के लिए खतरा बनेंगे।
विकट और प्रतिकूल स्थितियों को अनुकूल बना लेने में माहिर थे नागेन्द्र।
आंसू गैस के हथगोले फायर करो, लेकिन डायरेक्ट भीड़ पर नहीं, ऐसी दिशा में फायर करो कि न्यूनतम जनहानि हो।
CRPF
सर! तरकीब काम कर रही है, इन पर सीधा हमला नहीं हुआ इसलिए इन्हें पीछे हटने और भागने का मौका मिल रहा है। सीधे हमले से इन्हें भड़काने वालों को यह कहने का मौका मिल जाता कि भारतीय सेना तुम्हारी दुश्मन है पर अब उन्हें वह मौका नहीं मिलेगा।

अपनी दक्ष निर्णय क्षमता और कुशाग्र नेतृत्व से श्रीनगर में उपद्रवियों की समस्या पर नागेन्द्र ने सफलतापूर्वक काबू पाया।
नतीजतन श्रीनगर और आस-पास के क्षेत्रों में ऐसी किसी भी स्थिति से निपटने के लिए नागेन्द्र को ही टीम लीड करने का दायित्व सौंपा जाने लगा।
नागेन्द्र के जज्बे और उनके बेहतरीन प्रदर्शन को देखते हुए उनका चयन COBRA बटालियन के लिए किया गया व उन्हें तीन महीने की एडवांस्ड ***COBRA COMMANDO TRAINING*** के लिए भेज दिया गया।
यहां भी नागेन्द्र का प्रदर्शन बेहद उत्कृष्ट रहा।
कैंद्रिय रिजर्व पुलिस बल
COBRA BATAION
मिदनापुर
ट्रेनिंग के पश्चात नागेन्द्र की पोस्टिंग ***207 COBRA*** बटालियन मिदनापुर डिस्ट्रिक्ट में हुई जोकि नक्सल प्रभावित क्षेत्र में तैनात थी।
यहां नागेन्द्र की मुलाकात विनोज जोसफ से हुई। शीघ्र ही दोनों में घनिष्ठ मित्रता हो गई।
नागेन्द्र की ही तरह विनोज भी एक उत्कृष्ट सहायक कमाण्डेंट थे।

श्री विनोज पी. जोसफ का जन्म 27 मई, सन 1977 में केरल के कोट्टायम डिस्ट्रिक्ट में हुआ था।
चार भाई-बहनों में विनोज तीसरे नम्बर पर थे।
बचपन से ही विनोज बेहद मृदुभाषी, शांत, सौम्य व मिलनसार प्रवृति के व्यक्तित्व के स्वामी थे जिस कारण वो शीघ्र ही लोगों को अपना मित्र बना लिया करते थे।
विनोज कुशाग्र बुद्धि थे और पढ़ने में बेहद निपुण थे।
पढ़ने के अलावा विभिन्न खेलों में भी विनोज की विशेष रुचि थी।
खासकर फुटबाल में उनकी विशेष रुचि थी।

ड्यूटी के अलावा विनोज को कुकिंग करके परिवार व मित्रों को खिलाने में विशेष रुचि थी।
C.R.P.F में चयनित होने के पश्चात विनोज एक बेहद दक्ष और कुशल असिस्टेंट कमांडेंट सिद्ध हुए।
विनोज ने भी 207 कोबरा में तैनाती पर COMMANDO ट्रेनिंग प्राप्त की।
और साथ ही जंगल में खतरनाक कॉम्बिंग ऑपरेशंस को लीड करने की ट्रेनिंग प्राप्त की!
ऐसा ही एक मिशन नागेन्द्र और विनोज को पश्चिम बंगाल के जंगल महल क्षेत्र में साथ मिलकर पूरा करना था।
पश्चिम बंगाल के जंगल महल क्षेत्र का सबसे बड़ा खतरा था कोटेश्वर राव उर्फ किशन जी।

ओड़िसा, बंगाल और झारखंड राज्यों के नक्सल समूह का सबसे शातिर व प्रमुख नेता।
किशन जी CENTRAL COMMITTEE C.P.I. (MAOIST) का भी प्रमुख और सक्रीय सदस्य था।
इस संस्था के पश्चिम बंगाल, झारखंड और ओड़िसा राज्यों में विस्तार के लिए प्रमुख रूप से किशन जी ने कार्य किया था।
यूं तो किशन जी का स्थाई निवास आंध्रप्रदेश था।
किन्तु लालगढ़, बेलपहारी, सालबोनी आदि जिलों में किशन जी निरंतर सभाएं करता था जहां आदिवासी व अन्य पिछड़ी जाति के नवयुवकों को गुमराह करके माओवादी बनाने का खाका तैयार किया जाता था।

माओवाद के विस्तार हेतु किशनजी विभिन्न राज्यों के पिछड़े क्षेत्रों और जिलों में वहां के प्रमुखों से मिलता और उन्हें अपनी नीतियों में शामिल करने के लिए प्रेरित करता था।
किशनजी का उद्देश्य था अधिक से अधिक पिछड़े हुए युवाओं को गुमराह कर उन्हें माओवाद के दलदल में गर्त करना।
इस देश की सरकार को हमारी कोई परवाह नहीं है, हमारे मरते हुए बच्चों की पुकार उनके कानों तक नहीं पहुंचती।
अगर उन तक अपनी आवाज पहुंचाना है तो एक ही रास्ता है, धमाकों की गूंज से सरकार की चूलें हिला दो।
हां-हां हम ऐसा ही करेंगे।
किशनजी के नेतृत्व में माओवादी ट्रेनिंग कैम्पस में इन युवकों के दिमाग में माओवाद का जहर भरकर उन्हें लड़ने के लिए प्यादों के रूप में तैयार किया जाता।
भारत सरकार पर हमले करने, लूटपाट और अन्य असामाजिक गतिविधियों की रूपरेखा तैयार करने में किशनजी माहिर था।
पुलिस वालों का काफिला कल सुबह ग्यारह से बारह के बीच इस रास्ते से होते हुए गुजरेगा, इस काफिले को लूट कर हम सिर्फ उन्हें गंभीर रूप से क्षति ही नहीं पहुंचाएंगे बल्कि उन्हें अपनी ताकत का अहसास भी कराएंगे।
कई बड़े माओवादी हमलों के पीछे किशनजी का दिमाग था।
POLICE

इंग्लिश, हिंदी और संथाली भाषाओं में सिद्धहस्थ किशनजी लोगों को अपनी वाकपटुता के जाल में फंसाकर उन्हें माओवादी सिद्धांतों से प्रभावित करने में निपुण था।
अपनी इन्हीं गतिविधियों के कारण किशनजी लम्बे समय से पुलिस और C.R.P.F. की हिटलिस्ट में चढ़ा हुआ था।
उस हिट लिस्ट से किशन जी का नाम हमेशा के लिए काटने के लिए एस.पी. प्रवीण त्रिपाठी ने 207 कोबरा के कमांडेंट श्री डी.टी.बैनर्जी से संपर्क किया।
किशनजी उर्फ प्रदीप CPI-ML-PW का सबसे प्रमुख नेता है, पश्चिम बंगाल, झारखंड और ओड़िसा में माओवाद को फैलाने के पीछे सबसे बड़ा हाथ और शातिर दिमाग, दोनों किशन जी के हैं। अब वह CPI-ML-PW की नेता सुचित्रा महतो के साथ मिलकर राज्य का बॉर्डर क्रॉस करके झारखंड भागने की फिराक में है।
पिछले कुछ समय से मिदनापुर में पुलिस और कोबरा के जॉइंट ऑपरेशन्स में कई नक्सली और बड़े नक्सली नेता मारे गए हैं जिस कारण से इन माओवादियों में भय व्याप्त है। इसलिए यह लोग पश्चिम बंगाल से भागकर अपना बेस झारखंड में शिफ्ट करना चाहते हैं।
अगर ये लोग राज्य की सीमा क्रॉस करने में सफल हो गए तो हमारे हाथों से निकल जाएंगे, हमें दिन-रात कॉम्बिंग करनी होगी और हर हाल में इन्हें धर-दबोचना होगा।
पुलिस के गुप्तचर पूरे क्षेत्र में फैले हुए थे और नक्सलियों की मूवमेंट्स के बारे में जानकारी इकट्ठा करने में जुटे हुए थे।

गुप्तचरों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर पुलिस और C.R.P.F. की जॉइंट टीम्स कॉम्बिंग ऑपरेशन करने में लगी हुई थी।
उधर C.R.P.F. कैम्प में फोन की घंटी घनघनाई!
किर्न किर्न किर्न किर्न
हैलो।
डी.टी. बैनर्जी बोल रहा हूं, नागेन्द्र!
गुड मॉर्निंग सर। कैसे हैं?
207 कोबरा बटालियन के कमांडेंट श्री डी.टी. बैनर्जी ने नागेन्द्र और विनोज जोसफ का चयन इस ऑपरेशन के लिए किया।
पुलिस ने इस बार बिलकुल पक्की इन्फॉर्मेशन दी है नागेन्द्र। C.P.I.(M) की बड़ी नेता सुचित्रा महतो तीन-चार अन्य नक्सलवादियों के साथ आज रात राज्य की सीमा पार करके झारखंड भागने की कोशिश करने वाली है।
यह बहुत बड़ा मौका है नागेन्द्र, शायद ऐसा मौका हमें दोबारा नहीं मिलेगा।
यह तो बहुत बड़ी खबर है सर। माओवादियों के बढ़ते हुए मनोबल पर चोट करने का यह सबसे उपयुक्त अवसर है।

यह ऑपरेशन तुम और विनोज मिल कर लीड करोगे। एनी प्रॉब्लम?
नो प्रॉब्लम सर।
तुम्हारे पास अपनी टीम तैयार करने के लिए सिर्फ एक घंटा है नागेन्द्र। हमे जंगल तक लम्बे रास्ते से जाना होगा!
हो जाएगा सर। लेकिन विनोज अभी एक दूसरे ऑपरेशन पर निकला हुआ है।
हमारे गुप्तचरों की तरह ही नक्सलवादियों के गुप्तचर भी चारों ओर फैले हुए हैं, अगर हमारे इस ऑपरेशन की भनक नक्सलवादियों को लग गई तो पूरा ऑपरेशन खटाई में पड़ जाएगा। हमें तुरंत कार्यवाही करनी होगी!
टीम एक घंटे में रेडी हो जाएगी सर! बस एक समस्या है। अभी मेरे पास कुछ ही जवानों की टीम है और इतना बड़ा कॉम्बिंग ऑपरेशन करने के लिए हमें टीम भी बड़ी चाहिए होगी ताकि हम जंगल का चप्पा-चप्पा कवर कर सकें। अगर हम जंगल का पूरा एरिया कवर नहीं कर पाए तो नक्सल- वादियों को बच निकलने का मौका मिल जाएगा।

ठीक है मैं पुलिस हेडक्वार्टर से बात करता हूं कि वे कुछ पुलिस जवानों की टीम एडिशनल एस.पी. आलोक राजोरिया के साथ भेजें।
नागेन्द्र अपनी टीम को रेडी कर रहे थे।
हम सिविल ट्रांसपोर्ट्स द्वारा लम्बे रास्तों से जाएंगे ताकि नक्सलवादियों के मुखबिरों को हम पर शक ना हो।
ठीक उसी समय असिस्टेंट कमांडेंट विनोज अपनी टीम के साथ फील्ड ऑपरेशन करके लौटे थे। जैसे ही उन्हें नागेन्द्र के ऑपरेशन के बारे में बता चला वो तत्पर हो उठे।
मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं, नागेन्द्र।
पर तुम तो अभी ही अपनी टीम के साथ ऑपरेशन से लौटे हो।
तो क्या हुआ? यह वर्दी कर्तव्य निभाने के लिए पहनी है, आराम फरमाने के लिए नहीं।
ठीक है विनोज! तुम्हे यहां के जंगलों में कॉम्बिंग ऑपरेशन का काफी अनुभव है, तुम्हारा यह अनुभव हमारे काम आएगा।
नागेन्द्र और उनकी टीम ऑपरेशन के लिए पूरी तरह तैयार थे। नागेन्द्र सिंह के साथ, सहायक कमाण्डेंट श्री विनोज पी. जोसफ, कॉन्स्टेबल एस. श्रीनू, एस. मुथुवेल, बिरेन्द्र कुमार सिंह, दीपक कुमार जाजा टीम में प्रमुख थे।

पब्लिक ट्रांसपोर्ट द्वारा टीम निर्धारित स्थान पर पहुंच गई।
झारग्राम के आई.पी.एस. एडिशनल एस.पी. आलोक राजोरिया भी अपनी पुलिस टीम के साथ वहां पहुंच चुके थे।
एक खतरनाक और दुःसाहसिक जॉइंट ऑपरेशन शुरू हो चुका था।
आल द बेस्ट टीम।
जीत हमारी ही होगी।
खास ऐसे ही ऑपरेशंस के लिए दक्ष और विशेष रूप से प्रशिक्षित थे कोबरा कमांडोज।
फूंक-फूंक कर कदम रखना जवानों।

जंगल की कॉम्बिंग करते हुए आधा घंटा बीत चुका था।
चप्पा-चप्पा छान मारा, नक्सलियों का कोई सुराग नहीं मिल रहा।
कहीं भाग तो नहीं निकले कमबख्त।
लगता नहीं कि इतनी जल्दी भाग सकते हैं, हम पूरे क्षेत्र की कॉम्बिंग कर रहे हैं, अगर भागते तो कहीं ना कहीं हमारे जवानों को खबर जरूर लगती।
अब तो जंगल भी खत्म हो गया है।
आस-पास कहीं से आवाजें आ रही हैं।
सर यह तो कोई गांव लगता है जिसके बाहर बच्चों के खेलने की आवाजें आ रही हैं।
टीम की मुश्किलें बढ़ रही थीं।
अंधेरा घिर रहा है, अगर अंधेरा होने से पहले हम उन नक्सलवादियों तक नहीं पहुंच पाए तो वे हमारे हाथों से निकल जाएंगे।

ठीक उसी समय श्रीनू चौंके।
नागेन्द्र का ध्यान भी उस दिशा में जा चुका था। C.R.P.F. की टीम से तकरीबन 7-8 मीटर के फासले पर झाड़ियों के पार एक शख्स नजर आ रहा था।
सर! उधर देखिए।
सावधान रहना साथियों, यह शख्स कोई गांव वाला भी हो सकता है या फिर नक्सलवादी।
सभी सावधान हो गए व उन्होंने झाड़ियों की ओट ले ली।
नागेन्द्र और उनकी टीम अगले कदम का विचार कर ही रहे थे कि सामने से पहल हो गई।
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़
नागेन्द्र और उनकी टीम पूरी तत्परता से बचाव मुद्रा में आई।
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़

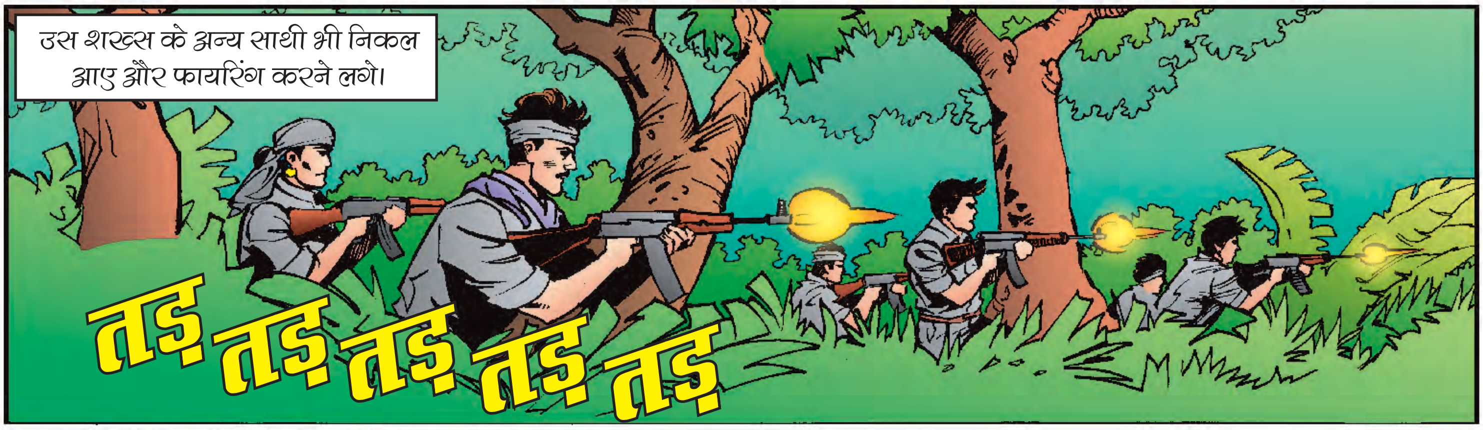
उस शख्स के अन्य साथी भी निकल आए और फायरिंग करने लगे।
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़

छोड़ना मत इन देशद्रोहियों को!! एक-एक को मार गिराओ!
रेट रेट
रेट रेट रेट

जवानों की फायरिंग से बचने के लिए नक्सलवादियों ने झाड़ियों व पेड़ों की ओट ले ली। जवानों के मुकाबले जिस हिस्से में नक्सलवादी थे उधर ओट लेने के लिए पेड़ व झाड़ियां अधिक थे।

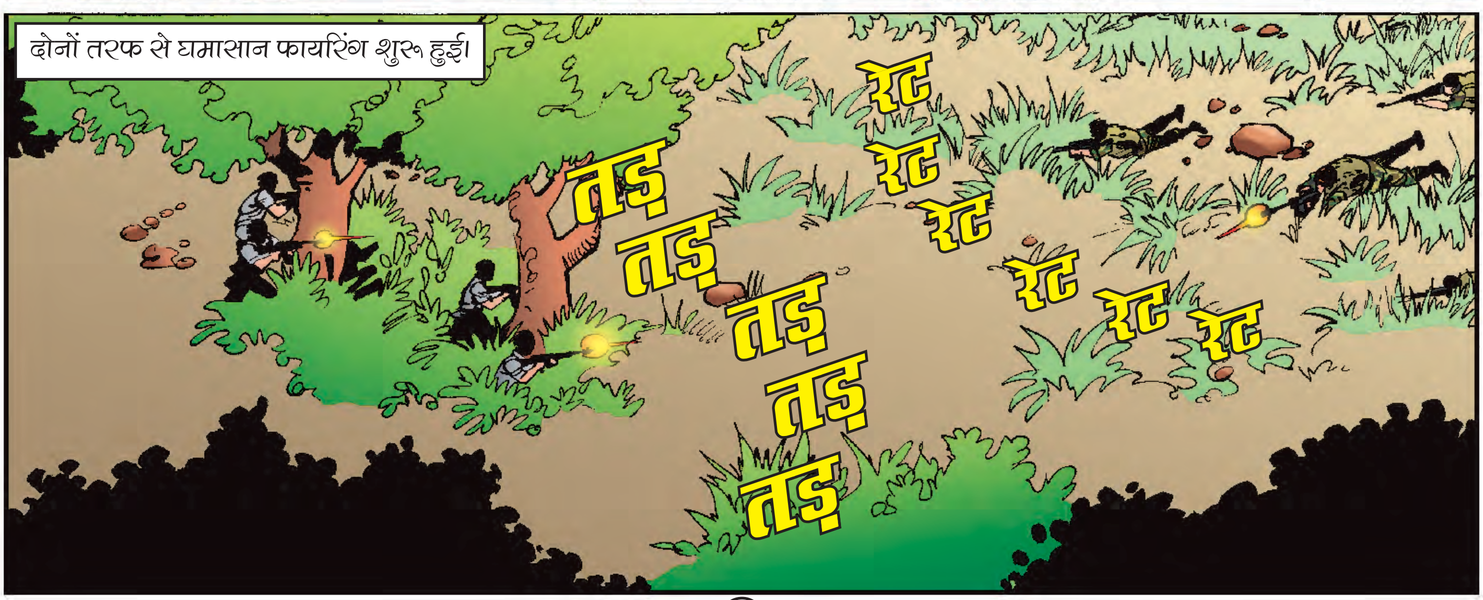
दोनों तरफ से घमासान फायरिंग शुरू हुई।
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़
रेट रेट रेट रेट रेट रेट

लेकिन विनोज और उनकी टीम के लिए स्थिति विकट थी क्योंकि उनके पास आड़ लेने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं था।
ये लोग जितनी हैवी फायरिंग कर रहे हैं इसमें हमारे जवान निश्चित रूप से घायल हो जाएंगे।
अब क्या करें विनोज?
सर! यहां छुपकर कुछ नहीं होने वाला, हम इन पर निशाना भी नहीं लगा पाएंगे और यह हमें मार गिराएंगे। हमें आगे बढ़ना होगा!
मैं अपनी टीम के कुछ जवानों को साथ लेकर आगे बढ़ता हूं। फासला सिर्फ सात मीटर के आस-पास है, एक बार हम इन तक पहुंच गए तो ये कायर कुछ नहीं कर पाएंगे।
तुम अकेले नहीं बढ़ोगे, नागेन्द्र। मैं भी तुम्हारे साथ हूं।
यह तो सरासर आत्महत्या करने वाली बात है। मैं और फोर्स भी तुम दोनों के साथ आगे बढ़ते हैं।
नहीं सर! इनकी फायरिंग इतनी भीषण है कि हमारे जवान निश्चित तौर पर निशाना बनेंगे। टीम लीडर होने के नाते मेरा यह कर्तव्य है कि अपनी टीम पर आने वाले किसी भी खतरे का मुकाबला पहले मैं करूं।

नागेन्द्र ने अपने साथियों का चयन किया।
विनोज, श्रीनू, मुथु, बिरेन्द्र, दीपक आप सभी मेरे साथ आओ।
अपने शब्दों से नागेन्द्र ने अपने साथियों में नव ऊर्जा का संचार कर दिया था।
तुम में से हर एक ट्रेंड कोबरा कमांडो है, ट्रेनिंग की आंच में दहक कर निकला वह फौलाद है जिसे ये सड़कछाप नक्सली भेद नहीं सकते। आज दिखा दो इन देश के गद्दारों को कि जब देश के रखवाले मारने पर आते हैं तो चुन-चुन कर मारते हैं।
नागेन्द्र दुश्मन पर मनोवैज्ञानिक रूप से दबाव बना रहे थे। उनका सिंहनाद नक्सलियों तक भी भली भांति पहुंचा!
घुस के मारो नमक हरामों को! इनमें से एक भी जिंदा बचकर नहीं जाना चाहिए।
नागेन्द्र की युक्ति काम कर गई, उसकी हुंकार से कायर नक्सलियों के कलेजे थर्रा गए थे।
ये सी.आर.पी.एफ. वाले नहीं छोड़ेंगे, कोई रहम भी नहीं खाएंगे। सीधे जान से मार देंगे।
नागेन्द्र के नेतृत्व में पूरे जोश के साथ जवानों ने नक्सलियों की ओर हल्ला बोल दिया।
गद्दारों को घुस के मारेंगे!!

इन्हें पीछे धकेलने और इन तक पहुंचने के लिए ग्रेनेड दागने होंगे मृत्थु।
परन्तु यहां ग्रेनेड लॉंचर सेटअप करने का पर्याप्त स्थान नहीं है। ग्रेनेड लॉंच करने के लिए जमीन पर रखकर 45 डिग्री के एलिवेशन पर ही फायर किया जा सकता है! अगर ऐसे फायर किया तो ग्रेनेड हमारे पास ही गिरकर फट सकता है।
मैं इसे अपने कंधे पर रखकर चलाऊंगा सर।
पागल हुए हो क्या मृत्थु! ग्रेनेड लॉंच करने परबहुत तीव्र झटका देता है, इसीलिए तो इसे जमीन पर रखकर चलाया जाता है, इंसानी शरीर के लिए इतना तीव्र झटका बर्दाश्त कर पाना आसान नहीं है। तुम्हारा कंधा उखड़ सकता है या फिर ग्रेनेड लांच होने के बजाए तुम्हारे ऊपर ही फट सकता है।
अगर जिंदगी में आसान काम ही करना होता तो सी.आर.पी.एफ. में नहीं आता सर। ये मुट्ठी भर नक्सली अगर एक जवान को भी मार गए तो लानत है मुझ पर, उससे बेहतर है कि मैं इनसे लड़ते हुए मरूं।

चेहरे पर शिकन तक ना आई उस रणबांकुरे को। ग्रेनेड का जबरदस्त शॉक अपने कंधे पर झेलते हुए दुश्मन पर मौत का बारूद दाग दिया उसने।
बूम
नक्सलियों के कलेजे दहल गए थे उस धमाके से।
भड़ाम भड़ाम
ग्रेनेड ब्लास्ट का फायदा उठाते हुए जवान आगे बढ़े।
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़
ग्रेनेड का एक स्पिलन्टर नागेन्द्र की बांह को घायल कर गया।
उफ!
तुम ठीक तो हो नागेन्द्र? तुम्हारे हाथ पर तो स्पिलन्टर लगा है।
मैं ठीक हूं! रुकना नहीं, आगे बढ़ते रहो।

जवानों के जोश और हौसले में कोई कमी ना आने दी थी विनोज ने।
मारो सालों को!!
तड़ तड़ तड़
तड़ तड़
अपनी हाहाकारी फायरिंग और दृढ़ जज्बे से विनोज ने नक्सलियों को दहला दिया।
तड़ तड़
अन्य जवानों की गोलियां भी अपने निशानों को बेध रही थीं!
विनोज ने बहुत ही दक्षता से किसी कुशल योद्धा की तरह अपनी फायरिंग से ना सिर्फ घायल नागेन्द्र को नक्सलियों की फायरिंग से कवर प्रदान किया बल्कि अपने साथी जवानों के जोश को भी कम नहीं होने दिया।
दोनों नायकों ने अपने कर्त्तव्य का मान रखा और अपने कदमों को मौत की आंधी के सामने भी थमने ना दिया।

उनकी इस जांबाजी और दिलेरी ने उनके साथियों में भी जोश फूंक दिया।
विनोज फायरिंग करते हुए आगे बढ़ गए थे और नक्सलवादियों तक पहुंच चुके थे। भागते हुए नक्सलवादियों पर नागेन्द्र ने अंधाधुंध फायर झोंक दिये।
तभी नागेन्द्र का ध्यान अपने पीछे दाहिने ओर आलोक राजोरिया की ओर गया जो एक चीटियों की बाम्बी की ओर फायर कर रहे थे।
यह राजोरिया सर एन्ट हिल पर फायर क्यों कर रहे हैं?
श्रीनू, मुत्थु आदि भी एन्ट हिल की ओर फायर कर रहे हैं, कुछ गड़बड़ है!
नागेन्द्र के पीछे बाएँ हाथ पर श्रीनू, मुत्थु, दीपक और बिरेन्द्र भी उस एन्ट हिल की ओर फायर कर रहे थे, नागेन्द्र फौरन चौकन्ने हुए।
ओह! तो यह नक्सली छुपा हुआ था उस बाम्बी के पीछे।
ठीक उसी समय बाम्बी के पीछे से एक साया बगुले की तरह छलांग मारकर बाहर निकला।
दोनों ने ही एक-दूसरे के ऊपर अपने हथियार तान लिए। मौत दोनों से सिर्फ तीन मीटर के फासले पर थी।

पहला वार नक्सली ने किया।
ट्रेनिंग बैच के बेस्ट शूटर नागेन्द्र का निशाना भला कैसे चूक सकता था। नागेन्द्र की गोली नक्सली के बाएं जबड़े को उड़ाती हुई सर के पार निकल गई।
श्रीनू आदि की गोली से सुचित्रा महतो भी घायल हुई पर वह अपने साथियों के साथ अंधेरे का फायदा उठाकर राज्य सीमा पार करने में सफल हो गई।
धत्त! हाथ से निकल गई।
कोई बात नहीं, उसे गोली लगी है, देर-सबेर पकड़ी ही जाएगी।
मारे गए नक्सलवादी की शक्ल देखकर आलोक राजोरिया हैरत से चिहुंक उठे।
यह तो किशनजी है! कमाल कर दिया, नागेन्द्र। बहुत बड़ा काम किया है तुमने। इस अकेले के मारे जाने से पूरे राज्य में माओवाद की रीढ़ टूट जाएगी।

यह श्रेय अकेले मेरा नहीं है, राजोरिया सर! मेरी जांबाज टीम ने भी मुश्किल घड़ी में मेरा साथ ना छोड़ा और यह सिद्ध कर दिया कि सी.आर.पी.एफ. जवानों के लिए देश का सम्मान अपनी जान से कहीं ऊपर है।

समाप्त

अलंकरण

24 नवम्बर 2011 को झारग्राम के समीप बरसोली, जिला जंबोनी, पश्चिम बंगाल के जंगलों में सी.आर.पी.एफ कोबरा, 207 बटालियन के जवानों द्वारा कॉर्डन एंड सर्च अभियान को अंजाम देते हुए उत्कृष्ट साहस और अतुल्य वीरता के प्रदर्शन हेतु निम्न अधिकारियों व जवानों को वीरता पुरस्कार से अलंकृत किया गया!

राष्ट्रपति के पुलिस पदक से सम्मानित

श्री नागेन्द्र सिंह
तत्कालीन रैंक : सहायक कमाण्डेंट
वर्तमान रैंक : सहायक कमाण्डेंट

श्री विनोज पी. जोसफ
तत्कालीन रैंक : सहायक कमाण्डेंट
वर्तमान रैंक : सहायक कमाण्डेंट

श्री बीरेंद्र कुमार सिंह
तत्कालीन रैंक : कॉन्स्टेबल
वर्तमान रैंक : हैड कॉन्स्टेबल

श्री दीपक कुमार जाजा
तत्कालीन रैंक : कॉन्स्टेबल
वर्तमान रैंक : हैड कॉन्स्टेबल

श्री एस. श्रीनू
तत्कालीन रैंक : कॉन्स्टेबल
वर्तमान रैंक : हैड कॉन्स्टेबल

श्री एस. मुथूवेल
तत्कालीन रैंक : कॉन्स्टेबल
वर्तमान रैंक : हैड कॉन्स्टेबल

माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी, श्री नागेन्द्र सिंह, सहायक कमाण्डेंट को राष्ट्रपति के पुलिस पदक से अलंकृत करते हुए।

माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी, श्री विनोज पी. जोसफ, सहायक कमाण्डेंट को राष्ट्रपति के पुलिस पदक से अलंकृत करते हुए।

सरदार पोस्ट एक शौर्य गाथा।

9 अप्रैल को गुजरात के रण ऑफ कच्छ में वीरता साहस और रण कौशल की एक अद्वितीय मिसाल रची गई जब केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने एक पूरी पाकिस्तानी ब्रिगेड को न केवल धूल चटा दी बल्कि उसे पराजित कर पीछे लौटने पर मजबूर कर दिया। दुनिया के युद्ध इतिहासों में दर्ज एक अनूठी शौर्य गाथा।

वीर भृगुनंदन

यह केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रथम कीर्ति चक्र प्राप्त करने वाले अमर शहीद भृगुनंदन चौधरी की वीरता, साहस, बलिदान और मित्र भाव की पराकाष्ठा की कहानी है। यह कहानी है उस जवान की जो बारूदी सुरंग में अपनी दोनों टांगें गंवा देने के बावजूद माओवादियों का सामना करता रहा। यह वह स्थिति थी जब माओवादियों के हमले में उसका पूरा दल बिखर गया था और उसके साथी सिपाही का भी दाहिना बाजू बारूदी सुरंग के विस्फोट में उड़ गया था। उस स्थिति में भी उसने न केवल माओवादियों के एक बहुत बड़े दल को रोके रखा बल्कि अपने घायल साथियों की भी मदद की।

शूरवीर प्रकाश

एक शौर्य चक्र और छः पुलिस वीरता पदकों से सम्मानित देश के सर्वाधिक अलंकृत पुलिस अधिकारी प्रकाश रंजन मिश्र के हैरत अंगेज कारनामों से भरपूर एक चित्रकथा। जानिए कैसे एक वीर अधिकारी ने एक गोली जांघ में, चार गोलियां दाहिने कंधे के नीचे सीने में और एक गोली कान को छील कर निकल जाने के बावजूद, माओवादियों के विरूद्ध एक बड़े अभियान को सफलतापूर्वक अंजाम दिया।

जाँबाज इलंगो

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में माओवादियों पर काल बन कर टूट पड़े तमिलनाडू के एक साधारण ग्रामीण परिवार से आए श्री एस. इलंगो की शौर्य गाथा जिन्हें तीन वीरता पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री एस. इलंगो देश के उन दिलेर अधिकारियों में गिने जाते हैं जिन्होंने अपने साहस व सूझबूझ से देश में आतंकवादियों, माओवादियों और देशद्रोहियों के विरूद्ध कई बड़े अभियानों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है।

अयोध्या के शूरवीर

5 जुलाई, 2005 स्वचालित रायफल्स, हथगोलों और रॉकेट लाँचर्स से लैस आतंकवादियों को अयोध्या स्थित विवादित स्थल को ध्वस्त करने से रोकना किसी भी सुरक्षा बल के लिए एक दुष्कर कार्य हो सकता था, लेकिन उन आतंकवादियों और विवादित स्थल में मौजूद दर्शनार्थियों के बीच एक अभेद्य सुरक्षा दीवार बन कर खड़े हो गए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी. आर.पी.एफ.) की 33वीं बटालियन के 'डी' कंपनी के जवान, जिन्होंने ना केवल उन सभी आतंकवादियों को मार गिराया बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि विवादित स्थल और दर्शनार्थियों को लेश मात्र भी क्षति न पहुंचे!

दिलेर दिव्यांशु

नक्सलियों के बीच भय के प्रतीक श्री दिव्यांशु की शौर्य गाथा। जिन्होंने अपने बाल्यकाल में ही केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का हिस्सा बनने का निर्णय ले लिया था। उप कमाण्डेंट श्री दिव्यांशु अपने अडिग इरादों और दृढ़ निश्चय के बल पर केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में भर्ती हो कर कोबरा कमांडो के रूप में कई दुष्कर ऑपरेशनों को निर्भयता से अपने सफल अंजाम तक पहुंचा कर दो बार पुलिस पदक से सम्मानित हुए।

हॉट स्प्रिंग्स

21 अक्टूबर,1959-लद्दाख के हॉट स्प्रिंग्स क्षेत्र में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने मातृभूमि की रक्षा हेतु अपने साहस और पराक्रम द्वारा चीन की सैनिक टुकड़ी से जमकर लोहा लिया। मातृभूमि की रक्षा का कर्तव्य निभाते हुए देश के 10 बहादुर जवान वीरगति को प्राप्त हुए। देश के उन वीर सपूतों के बलिदान की स्मृति में 21 अक्टूबर को देश के सभी पुलिस बलों द्वारा शहीद स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है!

अद्वितीय अंजनी

हाथपोखर, बिहार के एक मध्यम वर्गीय परिवार से आए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के सहायक कमाण्डेंट श्री अंजनी कुमार की शौर्य गाथा। श्री अंजनी कुमार ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की कोबरा टीम के सहायक कमाण्डेंट के रूप में अतुलनीय वीरता और अदम्य साहस का परिचय देते हुए नक्सलियों व आतंकियों के खिलाफ अनेक सफल अभियानों को अंजाम दिया, जिसके लिए उन्हें दो बार वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया।

संसद के प्रहरी

13 दिसम्बर 2001, देश के संविधान के आधार स्तम्भ संसद भवन को नेस्तनाबूद करने के इरादे से फिदायीनों द्वारा किए गए आत्मघाती हमले को सी.आर.पी.एफ. के अधिकारियों व जवानों ने अतुल्य साहस और वीरता का प्रदर्शन करते हुए विफल किया। उन्होंने न केवल सभी आतंकियों को मार गिराया अपितु संसद भवन तथा उसमें मौजूद सांसदों एवं कर्मचारियों पर लेश मात्र भी आंच नहीं आने दी।

बहादुर बिरेश

बसगोइ, तहसील सासनी, हाथरस, उत्तर प्रदेश के छोटे से परिवार में जन्मे श्री बिरेश चौहान के अन्दर देश प्रेम और देशभक्ति की भावना काफी छोटी उम्र से ही विकसित हो गई थी! युवावस्था में कदम रखने के साथ ही श्री बिरेश ने देशभक्ति के जज्बे को देश की रक्षा के प्रति समर्पित करने का निर्णय लिया तथा सी.आर.पी.एफ. में भर्ती होकर उप निरीक्षक का पद हासिल किया। इस पद पर रहते हुए उन्होंने आतंकियों और नकसलियों के विरुद्ध कई दुष्कर अभियानों को अंजाम दिया। जगरगुण्डा, जिला सुकमा, छत्तीसगढ़ के समीप पूवर्ती गांव में ऐसे ही एक अभियान को उन्होंने विकटतम परिस्थितियों से जूझते हुए अपनी जान की परवाह किए बिना, अदम्य साहस व उत्कृष्ट वीरता का परिचय देकर सफलतापूर्वक पूर्ण किया। उनकी इस वीरता व साहस के लिए उन्हें राष्ट्रपति के वीरता पदक से सम्मानित किया गया।

CENTRAL RESERVE POLICE FORCE

पश्चिम बंगाल के जंगल महल क्षेत्र का सबसे बड़ा खतरा कोटेश्वर राव उर्फ किशन जी था। वह ***Central committee C.P.I.(Maoist)*** का भी प्रमुख और सक्रिय सदस्य था। ओड़िसा, बंगाल और झारखंड राज्यों के नक्सल समूह का सबसे शातिर व प्रमुख नेता, जिसका उद्देश्य था अधिक से अधिक पिछड़े हुए युवाओं को गुमराह कर उन्हें माओवाद की दलदल में गर्त करना। कई राज्यों के विभिन्न पिछड़े क्षेत्रों में नक्सली गतिविधियों व हमलों में पुलिस को किशनजी की तलाश थी। पुलिस से प्राप्त सूचना के आधार पर श्री नागेन्द्र सिंह व श्री विनोज जोसफ के नेतृत्व में कोबरा **207** बटालियन सी.आर.पी.एफ. और स्थानीय पुलिस ने साझा अभियान की योजना बनाई। अभियान के दौरान हथियारबंद नक्सलियों से चारों ओर से घिर चुके सी.आर.पी.एफ. के दल ने अपनी जान की परवाह किए बगैर, वीरता से विकट परिस्थितियों का डटकर सामना करते हुए किशनजी नामक आतंक का सदा के लिए अंत किया।